हिंदी पत्रिका अंक-2
10/2025

चन्दन वाणी २

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको – बेंगलूरु क्षेत्रीय कार्यालय

मुख्य सम्पादक एवं संरक्षक

श्री. आ. सिवसंकर
क्षेत्रीय प्रमुख

सम्पादक

श्रीमती रेणुका गुणशेखरन
व.प्र (स) / हिन्दी नोडल अधिकारी

सह सम्पादक

श्री पी.वै. विनयन, प्र (आईटी)
हिन्दी नोडल सहायक

श्री गिरिजेश यादव
प्रशिक्षु अधिकारी (प)

और

श्री कृष्ण लाल गर्ग
प्रशिक्षु अधिकारी (वित्त)

सहयोग एवं परामर्श
हडको क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू के समस्त कर्मयोगी

विषय सूची

1	संदेश
2	बेलूरु और हलोबीडु लेख
3	बेंगलूरु परिधीय रिंग रोड लेख
4	बेंगलूरु ट्विन टनल नॉर्थ–साउथ कॉरिडोर परियोजना लेख
5	वित्तीय समावेशन और साक्षरता लेख
6	एच.ए.एल कालोनी की हरित उड़ान लेख
7	हुडको की सीएसआर पहल लेख
8	कर्नाटक में व्यावसायिक विकास बैठक
9	कविताएं
10	प्रवाह लेख
11	प्रेम कहानी
12	कर्नाटक धरोहर लेख
13	कर्नाटक के गौरवशाली नायक
14	ओब्बट्टु रेसीपी
15	हडको वार्षिकोत्सव
16	हिन्दी माह आचरण
17	स्वच्छ भारत अभियान
18	हडको परिवार के छोटे कलाकार
19	सेवा निवृत्त अधिकारीगण

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु अपनी वार्षिक पत्रिका *"चंदनवाणी"* के द्वितीय अंक का प्रकाशन कर रहा है । यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यकलापों, उपलब्धियों और प्रयासों का दर्पण है, बल्कि यह हमारी सृजनात्मकता, साहित्यिक अभिरुचि तथा सकारात्मक ऊर्जा का भी जीवंत प्रतिबिंब है ।

हडको ने अपने स्थापना काल से ही देश के इन्फ्रास्ट्रक्चर, विशेषकर आवासन और शहरी विकास क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है । यह यात्रा केवल परियोजनाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास की भावना भी समाहित रही है । *"चंदनवाणी"* का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि हम केवल इमारतें नहीं बनाते, बल्कि समाज और संस्कृति के मजबूत स्तंभों का भी निर्माण करते हैं ।

मैं आशा करता हूँ कि "चंदनवाणी" पत्रिका क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियों के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति को उजागर करने का समुचित माध्यम बनेगी तथा रचनाकारों एवं पाठकों के बीच हिन्दी भाषा में विचार-विमर्श और परस्पर वैचारिक आदान-प्रदान के लिए एक कड़ी का काम करेगी । मैं संपादकीय दल और इस पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों का उनके अथक प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूं ।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल – बेलूर और हलेबीडु, कर्नाटक

बेलूर और हलेबीडु, होयसला राजवंश की राजधानी हुआ करती थी। बेलूर और हलेबीडु 16वीं शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से था और बारहवीं (12th) और तेरहवीं (13th) सदियों का वास्तुशिल्पिक केंद्र भी था | यह आज भी अपनी नक्काशी और शानदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं| शुरू में बेलूर को वेलापुरी के नाम से जाना जाता था और होयसला राज्यवंश की पहली राजधानी थी| बाद में हैलेबिडु जो द्वारसमुद्र के नाम से जाना जाता था वो होयसला राज्य की राजधानी बनी| होयसला ने कर्नाटक के कई हिस्सों में दीवारों, छतों, घुमावदार स्तंभों और कई अन्य मूर्तियों के लिए अत्यंत अलंकृत मंदिरों का निर्माण करके चालुक्या शैली की वास्तुकला में सुधार किया| उन्होंने द्रविड़ शैली, वास्तुकला की वेसरा शैली का अनुसरण किया| बेलूर की चेन्नकेशवस्वामी मंदिर, राजा विष्णुवर्धन का चोला राजा के ऊपर विजय का प्रतीक है| उसके बाद हलेबीडु में होयसालेस्वर मंदिर का निर्माण किया गया जो भगवान शिव को समर्पित था|

इस राजवंश के संस्थापक राजकुमार "सला" थे। “होयसला” वंश के पीछे एक पौराणिक कथा जूडी हुई है। एक दिन राजकुमार के शिक्षक जब पाठ पढ़ा रहे थे उसी समय वहां एक बाघ झाड़ियों से आ गया, तुरन्त गुरुजी ने "होय सला" कहके राजकुमार का ध्यान आकर्षित किया जिसका अर्थ था “प्रहार करो”। राजकुमार ने तुरंत हाथ से ही बाघ को मारकर, गुरूजी कि रक्षा की। यह प्रहार ही बाद में होयसला वंश का प्रतीक बन गया।

कई शासकों की तरह, विष्णुवर्धन एक प्रसिद्ध राजा था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शांतला एक बहुत सुंदर और नाट्य शास्त्र के पंडिताइन थी और खुद अद्भुत नर्तकी थी| वह नृत्य कला और शास्त्र की अनुपम उदहारण थी| उनको अपने हर एक नर्तन की मुद्रा को प्रतिमा या मूर्ती के रूप में बनाने का ख्याल आया और उन्होने राजा विष्णुवर्धन से इसके बारे में चर्चा की और दोनों ने उस कला के लिए एक मंदिर बनाने का निर्णय लिया। शांतला ने उनके गुरु जक्कण्णा आचार्य से मंदिर बनाने का निवेदन किया। लेकिन आचार्य ने मूर्ति बनाते समय, अन्य कोई मनुष्य सामने न आने की एक शर्त रखी और शर्त को पूरा करने के लिए रानी होकर भी शांतला ने खुद गुरूजी की सेवा की।

आचार्य ने नृत्य मुद्राओं की मूर्तियाँ इतनी जीवंत बनायी, कि देखते ही मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है कि पत्थरों में इतनी जीवंत और आकर्षक मूर्ति कैसे बना सकते हैं। इन मूर्तियों की भव्यता और सुंदरता क्षण भर में ही मन को मोह कर, किसी दूसरे ही दुनियां में ले जाती है।

बेलूर और हलेबीडु के मंदिर अपने दक्षिण भारतीय वास्तुकला के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते है। इन दोनों स्थानों पर मंदिरों को प्रसिद्ध वास्तुकार अमरशिल्पी जक्कन्नाचार्य द्वारा बनाया गया है। बेलूर के 12वीं शताब्दी के मंदिर में कई मूर्तियां हैं जिन्हें मदनिका या नर्तकी के रूप में जाना जाता है। इसमें विभिन्न आकृतियों के कई स्तंभ हैं। हर एक स्तंभ एक नई सोच का प्रतीक है|

साथ ही मंदिरों को हिंद पौराणिक कथाओं की लिपियों के आधार पर बनाया गया है।

बेलूर में चेन्नकेशव मंदिर को विष्णुवर्धन द्वारा होयसल राजा ने 1117 ईस्वी में चोलों की लड़ाई में चोलों के खिलाफ एक महत्वपूर्ण जीत का जश्न मनाने के लिए बनवाया गया था। चूंकि राजा एक असाधारण मंदिर चाहते थे, इसलिए इसे एक स्थापत्य शैली (होयसल शैली) में बनाया गया है जो इस क्षेत्र के लिए नया था। स्मारक असाधारण रूप से बड़ा है और इसकी सजावट बहुत भव्य है। विष्णुवर्धन के शासन के बाद भी इस मंदिर की सजावट को उनके उत्तराधिकारियों द्वारा जारी रखा गया और इस मंदिर को पूरा करने में लगभग 103 साल लगे|

<u>महास्तंभ</u>: यह स्तंभ आधार या नींव को छुए बिना खड़ा है। आधार या नींव पर एक कागज़ या रुमाल को एक तरफ से दूसरे तरफ ले जा सकते हैं। 12वीं शताब्दी में किए गए इस स्तंभ की तकनीकी की कल्पना कीजिए, आज तक इस तकनीकी को समझ नहीं पाया है। 800 से ज्यादा सालों से बारिश, गरज, बिजली, हवा आदि के बावजूद, इस स्तंभ को कुछ नहीं हुआ है।

हम सभी भारतवासियों को इस भव्य और प्राचीन कलात्मक मंदिरों को सिर्फ आँखों से देखना ही नहीं बल्कि समझने की भी अत्यंत आवश्यकता है|

यह यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व धरोहर स्थलों में से एक है ।

इस सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण सन्देश - दुनिया को देखने से पहले अपना देश और उसकी खूबियां और चरित्र को देखें, समझें और परखें| एक नागरिक होने के नाते यह हमारा प्रथम कर्त्तव्य है|

द्वारा रचित
आरती आर. बेल्वाडी
निवृत्त उ.म.प्र (आईटी)

बेंगलूरु परिफेरल रिंग रोड (पीआरआर) परियोजना – बेंगलूरु विकास प्राधिकरण

बेंगलूरु, भारत का तकनीकी और व्यावसायिक केंद्र, पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से बढ़ा है। इस तीव्र विकास के साथ शहर के सड़क ढांचे पर भारी दबाव बढ़ गया है, जिससे आउटर रिंग रोड (ओआरआर) और राष्ट्रीय राजमार्गों जैसी मुख्य सड़कों पर गंभीर यातायात जाम होने लगा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए बेंगलूरु विकास प्राधिकरण (बीडिए), ने परिफेरल रिंग रोड (पीआरआर) परियोजना की योजना बनाई है। यह एक विशाल अवसंरचना पहल है, जो शहर के चारों ओर एक व्यावसायिक गलियारे के रूप में कार्य करेगी और भविष्य के लिए टिकाऊ शहरी गतिशीलता सुनिश्चित करेगी।

- परियोजना का नाम: भूमि अधिग्रहण एवं परिफेरल रिंग रोड (पिआरआर) परियोजना
- क्रियान्वयन एजेंसी: बेंगलूरु विकास प्राधिकरण (बीडिए), शहरी विकास विभाग, कर्नाटक सरकार के अधीन एक वैधानिक निकाय
- भूमि अधिग्रहण: बेंगलुरु शहरी ज़िले में 2,560 एकड़ और 26.75 गुन्टा भूमि
- परियोजना लंबाई: 73.04 किमी – तुमकूर रोड (NH-4) से होसुर रोड (NH-7) तक, बल्लारी रोड और ओल्ड मद्रास रोड से होते हुए, NICE रोड के साथ एकीकृत
- परियोजना लागत: ₹34,984 करोड़ (भूमि अधिग्रहण, निर्माण व अन्य खर्च सहित)
- हडको मूल्यांकन: ₹27,000 करोड़ का ऋण (परियोजना लागत का 77.17%)
- भूमि अधिग्रहण व्यय: ₹20,511.07 करोड़ (75.97%)
- निर्माण व्यय: ₹6,488.93 करोड़ (24.03%)

पीआरआर परियोजना के मुख्य लाभ:

- शहर की सड़कों से यातायात का बोझ कम होगा – भारी वाहनों और यातायात ट्रैफ़िक को शहर की आंतरिक सड़कों से हटाया जाएगा ।
- बेहतर संपर्कता – NH-4, NH-7, SH-35, SH-104, ORR और आने वाले एक्सप्रेसवे से सीधा जुड़ाव; बीआईएएल (हवाई अड्डा) तक पहुंच सुधरेगी।
- आर्थिक गलियारा – औद्योगिक क्लस्टर, आईटी पार्क, आवासीय टाउनशिप, शैक्षणिक व स्वास्थ्य संस्थान विकसित होंगे।
- पर्यावरणीय लाभ – शहर के अंदर ट्रैफ़िक घटने से प्रदूषण और ताप द्वीप प्रभाव कम होंगे, वायु गुणवत्ता बेहतर होगी।
- रोज़गार सृजन – निर्माण चरण में व्यापक प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोज़गार और संचालन में दीर्घकालिक अवसर।
- सड़क सुरक्षा में सुधार – वैज्ञानिक डिज़ाइन और उपयुक्त ज्योमेट्री दुर्घटनाओं को कम करेंगे।

- यात्रा समय और लागत में कमी – तेज़ आवाजाही से ईंधन, वाहन रखरखाव और संचालन लागत घटेगी।
- संतुलित शहरी विकास – शहर के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों में नए शहरी नोड्स विकसित होंगे, ग्रामीण-शहरी संपर्क सशक्त होगा।
- सामाजिक-आर्थिक प्रगति – परियोजना मार्ग से लगे गांवों को बेहतर सड़क सुविधा और नए बाज़ारों तक पहुंच मिलेगी।

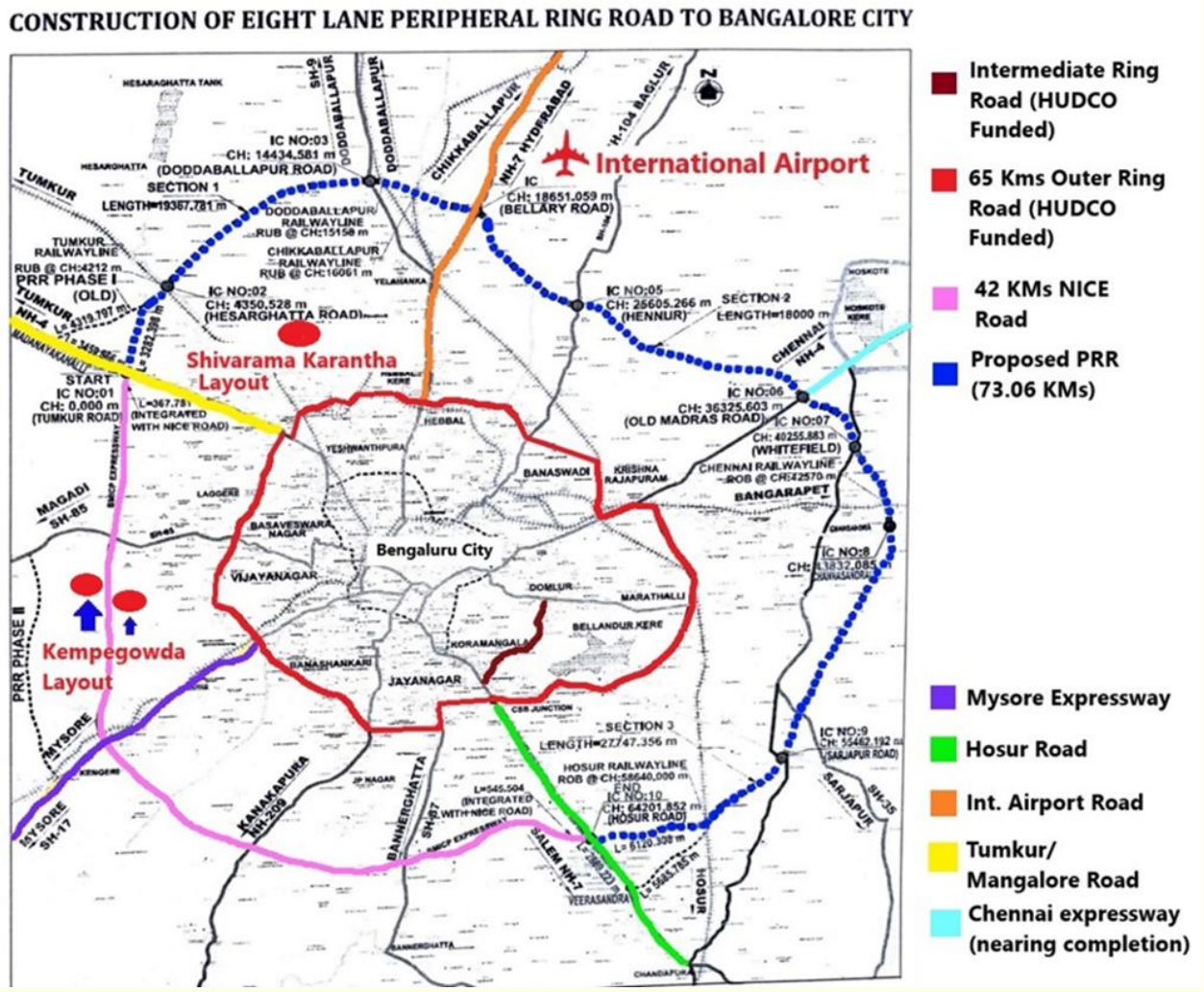

पृष्ठभूमि एवं आवश्यकता:

शहरी दबाव: बेंगलूरु, भारत का पाँचवाँ सबसे बड़ा शहर, 821 वर्ग किमी में फैला हुआ है और इसकी आबादी 1.5 करोड़ से अधिक है। वाहनों की संख्या 75 लाख पार कर चुकी है, जो सालाना 10.2% की दर से बढ़ रही है, जबकि जनसंख्या वृद्धि मात्र 3.25% है।

मौजूदा आउटर रिंग रोड (ओआरआर): बीडिए द्वारा बनाई गई 65 किमी की सड़क मूलतः बाईपास के रूप में बनी थी, परंतु इसके किनारे तेजी से हुए विकास ने यातायात को जाम कर दिया है।

हवाई अड्डा स्थानांतरण: अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को एच.ए.एल से देवनहल्ली शिफ्ट करने से ट्रैफ़िक पैटर्न बदला और आउटर रिंग रोड व शहर की मुख्य सड़कों पर दबाव बढ़ा।

वर्तमान सीमाएँ: बीडीए और ग्रेटर बेंगलूरु प्राधिकरण द्वारा फ्लाईओवर और ग्रेड सेपरेटर बनाने के बावजूद जाम की समस्या बनी हुई है।

पेरिफेरल रिंग रोड की आवश्यकता: यह परियोजना, जो शहर के केंद्र से 17–25 किमी दूर होगी, वाणिज्यिक वाहनों और अंतर-राज्यीय यात्री यातायात के लिए बाईपास का काम करेगी तथा बेंगलूरु के दीर्घकालिक विकास हेतु एक नई गतिशीलता आधार तैयार करेगी।

हडको की भूमिका:

हडको ने ₹27,000 करोड़ की वित्तीय सहायता स्वीकृत की है, जिसमें भूमि अधिग्रहण की संपूर्ण राशि और निर्माण कार्यों के लिए समर्थन शामिल है।

हडको पहले भी बीडीए के साथ आउटर रिंग रोड परियोजना सहित 26 योजनाओं में ₹477.24 करोड़ का वित्तपोषण कर चुका है।

इस बड़े ऋण समर्थन से हडको टिकाऊ, समावेशी और विकासोन्मुख शहरी अवसंरचना के निर्माण में अपनी भूमिका दोहराता है।

पेरिफेरल रिंग रोड परियोजना हडको की "नेशन बिल्डर" की भूमिका को रेखांकित करती है, जो संतुलित शहरीकरण और जीवन-स्तर सुधार में सहायक है।

परिफेरल रिंग रोड परियोजना बेंगलूरु के शहरी परिदृश्य को पुनर्परिभाषित करने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है। यह परियोजना केवल यातायात दबाव कम नहीं करेगी, बल्कि एक सशक्त व्यावसायिक गलियारे के रूप में आर्थिक गतिविधियों, निवेश और जीवन-स्तर में वृद्धि को बढ़ावा देगी। बीडीए की सिद्ध क्रियान्वयन क्षमता और हडको के मजबूत वित्तीय सहयोग के साथ, परिफेरल रिंग रोड परियोजना बेंगलूरु को एक विश्वस्तरीय, भविष्य-उन्मुख महानगर बनाने में मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ. गिरीश कार्नाड टी.जी
सं.म.प्र (प)

बेंगलूरु ट्विन टनल नॉर्थ–साउथ कॉरिडोर परियोजना

बेंगलूरु स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (B-SMILE विशेष प्रयोजन वाहन (SPV) द्वारा):

"भारत की सिलिकॉन वैली" कहे जाने वाले बेंगलूरु को इस समय गंभीर यातायात जाम और लम्बे आवागमन समय की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। हेब्बाल जंक्शन (उत्तर) से सिल्क बोर्ड जंक्शन (दक्षिण) तक का मार्ग शहर के सबसे व्यस्त कॉरिडोरों में से है, जहाँ यात्रा समय अक्सर 90-120 मिनट तक पहुँच जाता है। यह जाम उत्पादकता को बाधित करता है, इंधन की खपत बढ़ाता है और वाहनों से होने वाले प्रदूषण में वृद्धि करता है।

शहर की गतिशीलता समस्याओं के समाधान के लिए बेंगलूरु ट्विन टनल नॉर्थ–साउथ कॉरिडोर परियोजना एक ऐतिहासिक पहल है, जिसे बेंगलूरु स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (B-SMILE) द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत हेब्बाल जंक्शन से सिल्क बोर्ड जंक्शन तक दो समानांतर भूमिगत सुरंगें बनाई जाएँगी, प्रत्येक लगभग 16.7 किमी लंबी है। ये सुरंगें एकतरफ़ा यातायात के लिए होंगी और तीन-लेन कैरजवे के साथ, आवश्यक स्थानों पर प्रवेश और निकास रैम्प दिए जाएँगे ताकि यातायात निर्बाध रूप से चले।

यह परियोजना एक उन्नत B.O.O.T (निर्माण, स्वामित्व, संचालन, स्थानांतरण) मॉडल के तहत लागू की जा रही है, जिसमें परियोजना लागत का अधिकतम 40% तक का व्यवहार्यता अंतर (VGF) समर्थन उपलब्ध है।

मार्ग	**हेब्बाल जंक्शन से सिल्क बोर्ड जंक्शन**
लंबाई	दो भूमिगत सुरंगें, प्रत्येक 16.7 किमी
संरचना	तीन लेन के कैरिजवे, प्रवेश / निकास रैम्प सहित
कार्यान्वयन मॉडल	उन्नत BOOT, अधिकतम 40% VGF सहायता के साथ
अनुमानित परियोजना लागत	₹17,780.13 करोड़
हडको ऋण सहायता	₹9,303.66 करोड़
निर्माण अवधि	4 वर्ष 2 माह
ऋण चुकौती अवधि	20 वर्ष, राज्य सरकार की गारंटी के साथ

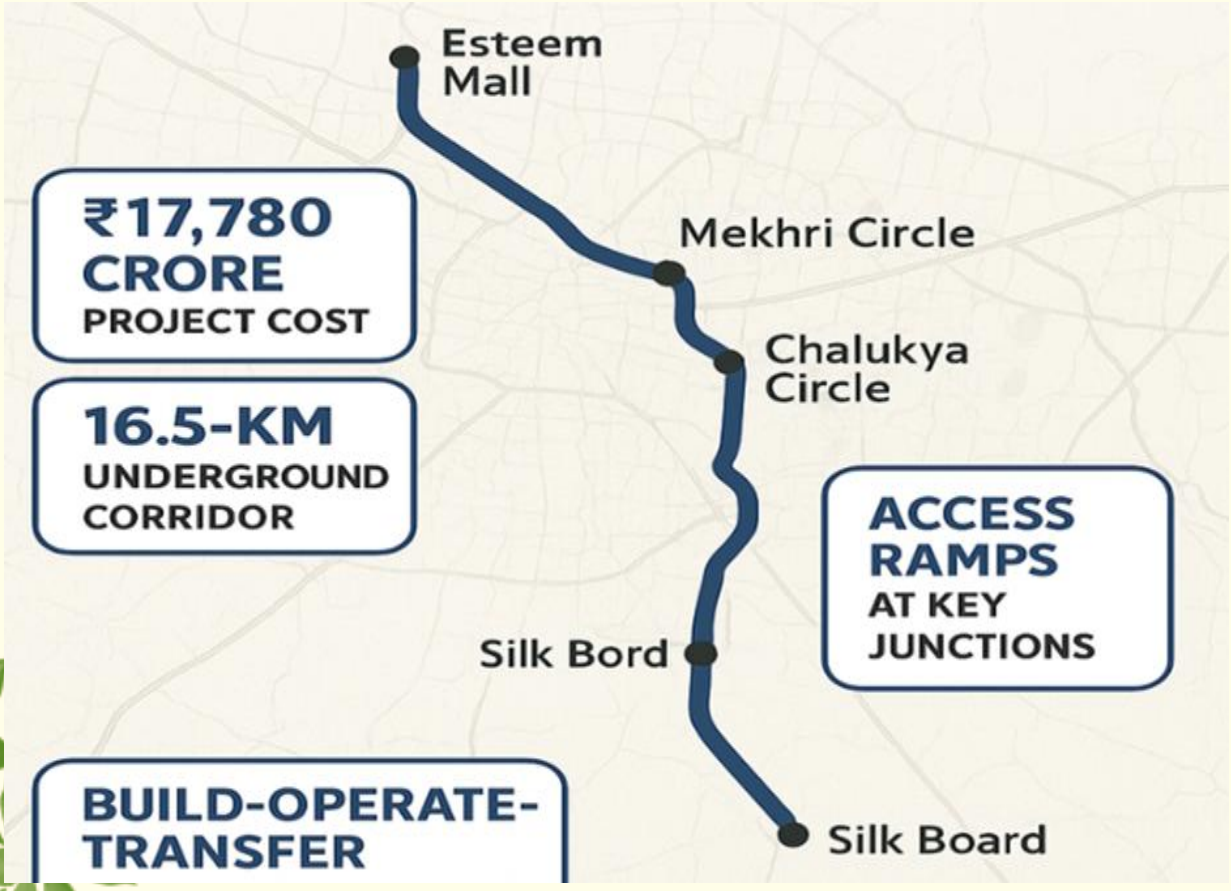

प्रमुख लाभ:

यात्रा समय में कमी	**हेब्बाल से सिल्क बोर्ड तक का सफर 90 मिनट से घटकर लगभग 35 मिनट रह जाएगा।**
जाम में कमी	सतही सड़कों से भारी यातायात हटने से सार्वजनिक परिवहन और आपातकालीन सेवाओं की गति बेहतर होगी।
पर्यावरणीय प्रभाव	शोर प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण में कमी और ईंधन की बचत, क्योंकि यातायात अधिक सुचारु होगा।
राजस्व मॉडल	टोल वसूली, प्रीमियम फ्लोर एरिया अनुपात शुल्क और विज्ञापन अधिकार, परियोजना की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करेंगे।
रोज़गार सृजन	निर्माण एवं परिचालन दोनों चरणों में बड़े पैमाने पर नौकरियाँ उपलब्ध होंगी।

हडको की भूमिका

हडको ने बेंगलूरु ट्विन टनल परियोजना के लिए ₹9,303.66 करोड़ की ऋण सहायता स्वीकृत की है। यह वित्तीय सहयोग केवल एक ऋण नहीं, बल्कि सतत और समावेशी शहरी विकास के प्रति हडको की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इस मेगा परियोजना के वित्तपोषण के माध्यम से हडको यातायात जाम को कम करने, संपर्कता बढ़ाने और बेंगलूरु के नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता सुधारने में योगदान दे रहा है। वर्षों से हडको ने बीबीएमपी (अभी ग्रेटर बेंगलूरु प्राधिकरण) के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे हैं — अब तक हडको ने बीबीएमपी को 27 परियोजनाओं के लिए कुल ₹2,566.76 करोड़ की ऋण सहायता दी है, जिसे समय पर चुकता कर उत्कृष्ट पुनर्भुगतान रिकॉर्ड प्रस्तुत किया गया है।

बेंगलूरु ट्विन टनल परियोजना मात्र एक बुनियादी ढांचा पहल नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी शहरी गतिशीलता का समाधान है। यह यात्रा समय घटाकर, जाम कम करके, उत्सर्जन घटाकर और एक स्थायी राजस्व मॉडल स्थापित कर, शहर के बुनियादी ढांचे को नई दिशा देगी। हडको के समर्थन से बेंगलूरु एक आधुनिक, कुशल और रहने योग्य महानगर बनने की ओर एक बड़ा कदम बढ़ा रहा है।

गिरिजेश यादव
प्र.अ (प)

वित्तीय समावेशन और साक्षरता: एक पीढ़ीगत आवश्यकता

वित्तीय समावेशन का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति की उपयोगी और किफायती वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं तक पहुंच हो - जैसे बचत, ऋण, बीमा और डिजिटल भुगतान - और यह सेवाएं जिम्मेदार एवं स्थायी तरीके से प्रदान की जाएं। लेकिन केवल पहुंच होना ही पर्याप्त नहीं है। इसलिए वित्तीय साक्षरता भी आवश्यक है, जिसका अर्थ है वित्तीय कौशलों को समझने और प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता। यह सूचित निर्णय लेने और दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा प्राप्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

◆ **बच्चे (आयु 6 - 17 वर्ष)**

कम उम्र में वित्तीय अवधारणाओं का परिचय देना, जीवनभर की वित्तीय स्वास्थ्य की नींव रखता है। बच्चों के लिए वित्तीय समावेशन और साक्षरता में शामिल हैं:

- लक्ष्य-आधारित बचत को बढ़ावा देने हेतु **माइनर सेविंग अकाउंट खोलना**
- **गेमिफाइड टूल्स** के माध्यम से बजट बनाना और पैसे का महत्व सिखाना
- **स्कूल शिक्षा में आयु-उपयुक्त वित्तीय पाठ्यक्रम** शामिल करना
- माता-पिता द्वारा **डिजिटल सुरक्षा और जिम्मेदार खर्च** की जानकारी देना

प्रारंभिक शिक्षा में वित्तीय साक्षरता को शामिल करने से हम आत्मविश्वासी और जागरूक भविष्य के आर्थिक प्रतिभागियों को तैयार करते हैं।

◆ **युवा (आयु 18–30 वर्ष)**

इस चरण में युवा, कार्यक्षेत्र में प्रवेश कर रहे होते हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे होते हैं या व्यवसाय शुरू कर रहे होते हैं। वित्तीय समावेशन और साक्षरता उन्हें मदद करता है:

- **शिक्षा, उद्यमिता या व्यक्तिगत विकास** के लिए क्रेडिट तक पहुंच
- **बजटिंग, बचत और निवेश** जैसी वित्तीय आदतें विकसित करना
- **डिजिटल फाइनेंस**, जैसे UPI, फिनटेक ऐप्स और साइबर सुरक्षा को समझना
- यात्रा, घर या उच्च शिक्षा जैसे लक्ष्यों के लिए योजना बनाना

प्रारंभिक वित्तीय साक्षरता युवाओं में आत्मनिर्भरता, नवाचार और जिम्मेदार नागरिकता को प्रोत्साहित करती है।

हडको hudco A NAVRATNA CPSE

◆ **मध्य-आयु वर्ग (आयु 40 - 60 वर्ष)**

इस उम्र में लोग प्रायः करियर, परिवार और भविष्य की योजनाओं के बीच संतुलन साधते हैं। वित्तीय समावेशन और साक्षरता उन्हें सक्षम बनाता है:

- **दीर्घकालिक निवेश और पेंशन योजनाओं** के माध्यम से सुरक्षित सेवानिवृत्ति
- **स्वास्थ्य, जीवन एवं संपत्ति बीमा** से जोखिम प्रबंधन
- **डिजिटल बैंकिंग और बजटिंग टूल्स** से संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग
- ऋण, संपत्ति और **विरासत नियोजन** पर सूचित निर्णय लेना

रणनीतिक वित्तीय साक्षरता जीवन की जटिल वित्तीय परिस्थितियों में लचीलापन बढ़ाती है और आत्मविश्वास प्रदान करती है।

मेघा मित्रुका
कृष्ण लाल गर्ग
प्र.अ (वित्त) की पत्नी

"सपने वो नहीं जो हम सोते वक्त देखते हैं,
सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते"

– ड़ॉ. अब्दुल कलाम

छतों पर सूरज, गलियों में समझ – एच.ए.एल कालोनी की हरित उड़ान

हरित भवन की सिद्धांत पढ़ना और उसे ज़मीन पर होते देखना – दोनों में फर्क होता है । जब मैं हुडको डिज़ाइन परामर्श (Design Consultancy) के तहत बेंगलूरु में निर्मित एच.ए.एल अधिकारियों के क्वार्टर्स का दौरा करने पहूँचा, तो लगा जैसे किताबों से बाहर निकलकर कोई प्रतिरूप जीवित हो उठा हो । वो कालोनी जो कभी कोयले से आई बिजली पर निर्भर थी, आज अपनी छत पर सूरज को आमंत्रित कर रही थी ।

क्वार्टर प्रवेश द्वार पर नाम पट्टिका

बचपन में गली को कोनों पर लगी 100W की सोडियम वाष्प लाइट याद है । वो जो पीली रोशनी देती थी और कई बार जलने में वक्त लगाती थी, उसी जगह अब 50W एलईडी लाइट लगी थी – तेज साफ और स्मार्ट । इन लाइटों में सेंसर लगे है, जो दिन में खुद बंद हो जाते है और शाम होते ही खुद जल उठते हैं । उनसे न केवल 50 प्रतिशत बजली की बचत होती है, बल्कि रखरखाव भी कम होता है । जहां एक पुरानी लाइट साल में 365 यूनिट खपत करती थी, अब वही काम आधी ऊर्जा में हो रहा है और --- उत्सर्जन भी 50 प्रतिशत कम ।

पुरानी सोडियम लाइट बनाम नई LED स्ट्रीट लाइट

स्वचालित टाइमर द्वारा बाहरी प्रकाश नियंत्रण

जब में सीढ़ियों से ऊपर पहुंचा तो कालोनी की छत पर लगे 32 सोलर पैनल दिखाई दिए – दोनों तरफ 16-16, कुल 12 (kilowat-peak) kWp की क्षमता । हर पैनल 335 वॉट का और सब ग्रिड से जुड़े हुए । इन पैनलों से उत्पन्न ऊर्जा से सीढ़ियों, गलियारा की रोशनी और सामान्य क्षेत्र के सारी जरूरतें पूरी हो जा रही थीं । GRIHA के मापदंडों ते अनुसार यह एक आदर्श व्यवस्था थी, जिसमें ऑन-साइट जनरेशन – मुख्यतः सामान्य क्षेत्र की लाइटिंग और आपतकालीन लाइटों के लिए उपयोग हो रही है, जिससे ट्रांसमिशन लॉस-- नगण्य रहता है ।

छत पर स्थापित सोलर पैनल

यह बात मुझे सबसे ज्यादा प्रभावशाली लगी – क्वार्टर का हर कमरा इस तरह डिजाइन किया गया था कि दिन के समय भरपूर प्राकृतित रोशनी अंदर आ सके । खिड़कियों की स्थिति, हल्के रंग की दीवारें और खुला वातायन लेआउट मिलकर ऐसा वातावरण बनाते हैं कि दिन में बल्ब की ज़रूरत नहीं पड़ती । सिर्फ यही नहीं, हवा के प्रवाह को ध्यान में रखते हुए किया गया डिज़ाइन प्राकृतिक ठंडक भी सुनिश्चित करता है – जिससे पंखों और शीतलक यंत्र की ज़रूरत बहुत हद तक घट जाती है । यह सच में ऊर्जा दक्षता का जीता-जागता उदाहरण था ।

प्राकृतिक रोशनी से जगमगाता कमरा

मैंने क्या सीखा?

में हडको में एक प्रशिक्षु अधिकारी हूँ और यह मेरी पहली फील्ड विजीट थी । पर इसने मुझे कागज़ से उठाकर जमीनी समझ दी । सोलर पैनल, एलईडी, प्राकृतिक रोशनी – ये सिर्फ तकनीकी नहीं, ये सोच का बदलाव हैं और यह तकनीकी किफायती और हमारे घरों में अपनाना आसान है । हरित भवन रूपरेखा मूल्यांकन सिर्फ एक रेटिंग सिस्टम नहीं है – यह एक दिशा है, जो हमें स्मार्ट और सस्टेनबल देश की ओर ले जाती है ।

हम क्या और कर सकते है? छतों पर सोलर पैनल लगाकर शुद्ध विद्युत मापन प्रणाली के ज़रिए विद्युत आपूर्ति कंपनी को बिजली बेचना

- एलईडी लाइट्स का अधिकतम उपयोग स्वचालित डिजिटल नियंत्रण प्रणाली के साथ करना
- नई इमारतों में डिज़ाइन के साथ प्राकृतिक वातायन और प्रकाश व्यवस्था
- हर कालोनी का सालाना ऊर्जा लेखा परिक्षण करना

निष्कर्ष:

एच.ए.एल अधिकारियों के क्वार्टर यह दिखाते हैं कि जब डिज़ाइन, नीति और सोच मिलती है तो असंभव कुछ नहीं होता । GRIHA मूल्यांकन की दिशा में एच.ए.एल कालोनी की ये उड़ान आनेवाले समय की प्रेरणा है । जहां पहले छतें खाली थीं, वहीं अब सूरज मुस्कुराता है और जहां पहले अंधेरा था, वहाँ आज समझ की रोशनी है ।

गिरिजेश यादव
प्र.अ (प)

हडको hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको की सीएसआर पहल: मांड्या में नेत्र चिकित्सा और प्रशिक्षण को मिली नई रोशनी

कल्पना कीजिए, जहाँ एक ओर मरीजों की आंखों में फिर से रोशनी लौट रही है, वहीं दूसरी ओर युवा डॉक्टरों के हाथों में सर्जरी की नई चमक आ रही है। यही साकार हुआ हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड की कार्पोरेट की सामाजिक उत्तरदायित्व सहायता से, जिसने मांड्या इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ में नेत्र चिकित्सा सेवाओं और शैक्षणिक प्रशिक्षण को नई दिशा दी।

हडको ने ₹98 लाख की स्वीकृत राशि में से ₹58.73 लाख की लागत से नेत्र शल्य चिकित्सा सूक्ष्मदर्शी (Ophthalmic Microscope) और एन.डी: वाई.ए.जी लेज़र मशीन उपलब्ध कराई। इन आधुनिक सुविधाओं का उद्घाटन श्री एस. गुरुदत्ता, पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख, हडको ने किया। कार्यक्रम में डॉ. पी. नारसिम्हा स्वामी, डीन एवं निदेशक, मांड्या इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़, डॉ. हनुमंथ प्रसाद एम., डॉ. शिवकुमार जी, डॉ. प्रदीप और हडको के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

सर्जरी और शिक्षा में आई नई चमक:

18 साल पुराने ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप को बदलकर हडको ने न सिर्फ संस्थान की तकनीकी ताकत बढ़ाई, बल्कि वहां पढ़ रहे 14 कनिष्ठ रेज़िडेंट्स को बेहतर सीखने का मौका दिया। नया सूक्ष्मदर्शी मोतियाबिंद जैसी जटिल सर्जरी में असाधारण सटीकता और स्पष्टता प्रदान करता है। शिक्षक अब रियल-टाइम में छात्रों को सर्जरी की बारीकियां दिखा सकते हैं। वीडियो रिकॉर्डिंग सिस्टम से छात्र बार-बार देखकर अपनी तकनीक सुधार सकते हैं और चर्चाओं में आत्मविश्वास से हिस्सा ले सकते हैं।

लेज़र से बदली मरीजों की ज़िंदगी:

नव स्थापित एन.डी: वाई.ए.जी लेज़र मशीन ने मरीजों के लिए नेत्र उपचार को आसान और सुरक्षित बना दिया। मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद होने वाली पोस्टीरियर कैप्सूलर अपैसिफिकेशन का उपचार अब मिनटों में संभव है। ग्लॉकोमा जैसे नेत्र रोगों के लिए भी यह मशीन दर्दरहित और तेज़ समाधान उपलब्ध कराती है। इस तकनीक ने आउट पेशेंट सेवाओं में क्रांति ला दी है, जिससे मरीज कम समय में बेहतर इलाज पा रहे हैं और डॉक्टर अपनी सेवाओं को और सशक्त बना पा रहे हैं।

"आंखों में उजाला, भविष्य में विश्वास":

एमआईएमएस के संकाय ने हडको का आभार जताते हुए कहा कि इस योगदान ने उनके विभाग को नई ऊर्जा दी है। उन्नत उपकरणों ने मरीजों के उपचार को सहज बनाया, वहीं छात्रों को विशेषज्ञ बनने की दिशा में एक मज़बूत आधार प्रदान किया।

"हडको की सीएसआर सहायता ने हमारी आंखों के इलाज और छात्रों के प्रशिक्षण – दोनों में एक नई रोशनी जलाई है" — एमआईएमएस टीम।

श्रीजीथ के.यू
व.प्र (प)

"सच्ची भक्ति वह है जो आत्मा को शुद्ध करे और समाज को सुधार दे"

- बसवण्णा

कर्नाटक में व्यावसायिक विकास बैठक

श्री डी.के शिवकुमार, उप मुख्यमंत्री, कर्नाटक, श्री तुषार गिरिनाथ, IAS,ACS-UDD-GOK, श्री राजेन्द्र चोलन, IAS, Commissioner, BMRDA, श्री मणिवण्णन पी, IAS, Commissioner, BDA के साथ हडकोगण श्री संजय कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एम. नागराज, निदेशक कार्पोरेट प्लॉनिंग, श्री आ.सिवसंकर, क्षेत्रीय प्रमुख, बेंगलूरु और डॉ. गिरीश कार्नाड टी.जी, सं.म.प्र (प), बेंगलूरु

श्री राजेन्द्र चोलन, IAS, Commissioner, BMRDA, के साथ हडकोगण श्री एम. नागराज, निदेशक कार्पोरेट प्लॉनिंग, श्री आ.सिवसंकर, क्षेत्रीय प्रमुख, बेंगलूरु और डॉ. गिरीश कार्नाड टी.जी, सं.म.प्र (प), बेंगलूरु

श्री नागराज, Director (Finance), KPTCL के साथ हडकोगण श्री एम. नागराज, निदेशक कार्पोरेट प्लॉनिंग, श्री आ.सिवसंकर, क्षेत्रीय प्रमुख, बेंगलूरु और डॉ. गिरीश कार्नाड टी.जी, सं.म.प्र (प), बेंगलूरु

"तुम कभी भी असफल नहीं होते, जब तक तुम प्रयास करना नहीं छोड़ते"

- स्वामी विवेकानंदा

NO REGRET

From the start
I could almost see the end
In my heart
I knew you'd get in my head

I ignored it
Because you were my whole world
I conformed and
Made myself your perfect girl

And the truth is you lied
You strung me along for the ride

I'm blowin' you a kiss goodbye
So glad I finally realize

Cus now I got no regrets
And if I could do it over 'gain
I wouldn't make the same mistake
Giving you my heart to break

You're fading like a sunset
And all I see is your silhouette
Ya you can try to right your wrongs
But baby I'm already gone
No regrets

Please don't call
I can't hear your voice again
Not your girl
Don't mess with my emotions

And the truth is
You lied
You strung me along for the ride

I'm blowin' you a kiss goodbye
So glad I finally realize

Cus now I got no regrets
And if I could do it over 'gain
I wouldn't make the same mistake
Giving you my heart to break

You're fading like a sunset
And all I see is your silhouette
Ya you can try to right your wrongs
But baby I'm already gone
No regrets

Its all compilated
It don't add up
Underestimated me
I'm so over us

No regrets
And if I could do it over 'gain
I wouldn't make the same mistake
Giving you my heart to break

You're fading like a sunset
And all I see is your silhouette
Ya you can try to right your wrongs
But baby I'm already gone

No regrets
No regrets
No regrets
No regrets
No regrets

By Nandan Vinayan
पी,वै. विनयन, मैनेजर (आईटी),
हडको-बेंगलूरु के सुपुत्र
Song composed by Nandan is available at :
https://youtu.be/nCCvNIFszuY

प्रवाह....एक ज़ख़्मी सच

पंचभूत - वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और आकाश – ये पाँचों तत्व अपने आप में विशिष्ठतापूर्वक है | वायु और जल इस ब्रह्माण्ड के प्राणियों का प्रथम आधार और आहार है |

मनुष्य की सृष्टि से भी पहले ये पंचतत्व उपस्थित थे और दुनिया के विनाश के बाद भी सदैव रहेंगे| इन शक्तियों पर निर्भर होने के बावजूद मनुष्य अपने छठे ज्ञान की शक्ति का उल्लंघन करता है | उलटी सोच का नतीजा... जल अब जलन बन गया है - यानि की बना दिया गया है | जल अभी एक समस्या नहीं एक मुददा है, कुछ वर्गों के लिए राजनीतिक नारा है | मनुष्य पृथ्वी और जल को अपने कब्ज़े में कैद करने का सपना देख रहा है |

भयानक कल के लिए तैयार रहिये, अगर हम अभी से सही कदम नहीं लेते, तो हमारे चारों तरफ जल का साया भी नहीं मिलेगा | जल का उपयोग, उसके महत्व को मन में रखकर करना ही अर्थपूर्ण है | जल के बारे में हमारे अन्धविश्वास और गलतफहमियों को जड़ से मिटाना अनिवार्य है| माना ज़मीन में जल कम है... लेकिन गाड़ियों में और बोत्लों में कैसे है? क्या हम ज़मीन के जल से खफा है...या फिर पैसे से पानी पर प्यार ज़्यादा हो गया ?

जल प्रवाह की विशेषता ऐसी है - कभी एक नन्हे बच्चे के लुढकते कदम की तरह, कभी खूबसुरत नर्तकी की तरह, कभी एक कविता की तरह, कभी विशाल राक्षस की तरह.... कभी ख़ामोशी से, कभी शांति से, कभी चतुराई से, कभी नादानी से, कभी रहस्यपूर्ण वातावरण पैदा करके..... ऐसे कई गुणवत्तावों का मिसाल बन के रह रहे जल को खुद्गर्ज़ नियत के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए |

भले ही जल बेरंग हो लेकिन साफ़, स्वच्छ और निष्कलंक है | ऐसे पवित्र जल को गन्दा करके काला और मैला न करें | हिंसात्मक मतभेदों से लाल न करें... क्योंकि अन्य प्राणियों का भी जल आहार और आधार है | उन प्राणियों का हक़ छीनने का हमें कोई अधिकार नहीं है | अर्थ (Earth) को अनर्थ (Unearth) बनाने की कोशिश करेंगे तो हमारा अंत तुरंत और निश्चिंत है |

हम जल से जीते हैं - न की जल हम से |

आर. गुणशेखरन
रेणुका गुणशेखरन, व.प्र (स) के पति

लेज़र और लैटर्स

राघव बेंगलुरु का एक चार्टर्ड अकाउंटेंट था - व्यवस्थित, सतर्क और दिनचर्या का पक्का । दूसरी ओर, सुरभि एक महत्वाकांक्षी एमबीए (फाइनेंस) ग्रेजुएट थी, जो मुंबई में इन्वेस्टमेंट बैंकिंग में काम करती थी। उसे अनिश्चितता और हाई-स्टेक्स फैसलों में मज़ा आता था।

दोनों की मुलाकात जयपुर में एक कज़िन की शादी में हुई - परिचय से नहीं, बल्कि एक ग़लती से। राघव कॉल लेने के लिए बाहर निकला और ग़लती से सुरभि के कमरे में चला गया । वह दर्पण के सामने खड़ी होकर दुल्हन के लिए डांस की प्रैक्टिस कर रही थी, उसे खबर भी नहीं थी कि कोई अंदर आ गया है। राघव ठिठक गया। सुरभि मुड़ी। कुछ पल की ख़ामोशी... फिर हंसी। यह अजीब था, अनजाना था, लेकिन अजीब तरह से आकर्षक भी।

अगले दो दिनों तक वे बार-बार आमने-सामने आते रहे - कभी मेहंदी में, कभी संगीत में, और कभी उन रिश्तेदारों से बचते हुए जो जोड़ियां बनाने में व्यस्त थे। उनकी बातें तीखी थीं, लेकिन रोचक थीं — अकसर बहसों में बदल जातीं, फाइनेंस, एथिक्स और जीवन के चुनावों पर । राघव को सुरभि का आत्मविश्वास भाता था, और सुरभि को राघव की शांत सटीकता ।

कज़िन की शादी के बाद भी उनका रिश्ता नहीं टूटा । फ़ोन कॉल्स एक आदत बन गए । मुंबई और बेंगलुरु के बीच की दूरी के बावजूद, वे कुछ स्थायी बना रहे थे - साझा प्लेलिस्ट्स के ज़रिए, लंबी चैट्स के ज़रिए, जो उनकी ज़िंदगी को जोड़ती थीं । लेकिन प्यार सिर्फ जुड़ाव नहीं है - यह धैर्य और मजबूती की परीक्षा भी है ।

राघव का पारंपरिक परिवार सुरभि की हाई-प्रोफाइल नौकरी और स्वतंत्र जीवनशैली को सहजता से स्वीकार नहीं कर पा रहा था । वहीं सुरभि के माता-पिता को डर था कि राघव का पारंपरिक सोच वाला स्वभाव उसकी महत्वाकांक्षाओं के साथ मेल खा पाएगा या नहीं । यह विरोध प्रत्यक्ष नहीं था, लेकिन लगातार मौजूद था — मुलाकातों को टालना, हल्की-सी नाराज़गी, भावनात्मक दबाव ।

फिर भी, दोनों डटे रहे। उन्होंने एक-दूसरे को बदलने की कोशिश नहीं की - बल्कि साथ-साथ बदले । राघव ने सहजता अपनाना सीखा, और सुरभि ने संरचना की अहमियत को समझा । उन्होंने इंतज़ार करना चुना - अनुमति का नहीं, समझ का ।

आख़िरकार, उन्होंने शादी कर ली । न कोई भव्यता, न कोई नाटक - बस एक सादासा समारोह, कुछ करीबी दोस्त और दो परिवार, जिन्होंने अंततः वही देखा जो इन दोनों ने देखा था: पूर्णता नहीं, बल्कि संभावना ।

कृष्ण लाल गर्ग
प्र.अ (वित्त)

VOICES

Shoot me like a loaded gun
Let it soak into your chest
Smoke is rising out the lungs
With all words I never meant

I've had enough
From feeing like I'm drinking from the devils cup,
The devils cup
We're closing up
I'm tired of burning bridges but I keep hearing demons inside
Can't get shake these voices out my head

Oh-oh-oh
Can't shake these voices out my head
Oh-oh-oh
Can't shake these voice out my

You're a diamond in the ruff and I'm a slave to all its wrath
I find it hard to feel your touch when all the darkness pulls me back

It's over now
I'm blinded by the lights and I can't face this sound
When the world is shouting back at me
I've fallen down
No I need you to save me cus I keep burning bridges inside
Can't get shake these voices out my head

Oh-oh-oh
Can't shake these voices out my head
Oh-oh-oh
Can't shake these voice out my

Yeah you know we're in a ruck
And I'm trying to shake him off
Because I'm with the devil dancing in the mirror
Yeh you know we're in a ruck
And I'm trying to shake him off
Because I'm with the devil dancing in the mirror

I've had enough
From feeing like I'm drinking from the devils cup,
The devils cup
We're closing up
I'm tired of burning bridges but I keep hearing demons inside

Oh-oh-oh
Can't shake these voices out my head
Oh-oh-oh

Yeah you know we're in a ruck
And I'm trying to shake him off
Because I'm with the devil dancing in the mirror
Yeh you know we're in a ruck
And I'm trying to shake him off
Because I'm with the devil dancing in the mirror

नन्दन विनयन
पी,वै. विनयन, मैनेजर (आईटी) के सुपुत्र

Song composed by Nandan is available at :
https://youtu.be/hZHJlle5cTk

कर्नाटक: धरोहर और अद्भुतताओं की भूमि
"एक राज्य अनेक दुनियां"

बेंगलूरु – भारत की सिलिकॉन वैली

राजधानी बेंगलूरु को "भारत की सिलिकॉन वैली" कहा जाता है, क्योंकि यह देश का आईटी और स्टार्टअप केंद्र है। इसकी खासियत यह है कि यहाँ का विधान सौधा, बेंगलूरु राजमहल और ग्रीष्मकालीन महल जैसे धरोहर स्थल और अत्याधुनिक टेक पार्क, शोध संस्थान तथा नवाचार केंद्र एक साथ दिखाई देते हैं। यहाँ केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भी है, जो अपने पर्यावरण-अनुकूल गार्डन टर्मिनल और केम्पेगौड़ा की 108 फीट ऊँची "स्टैच्यू ऑफ़ प्रॉस्पेरिटी" के लिए प्रसिद्ध है।

मैसूर पैलेस – शाही वैभव

मैसूर राजमहल भारत के सबसे भव्य राजमहलों में गिना जाता है। इंडो-सरासेनिक शैली में बने इस महल की गुंबदें, मेहराबें और नक्काशी अद्भुत हैं। इसकी अनोखी बात यह है कि हर रविवार और खासकर दशहरा पर्व पर, यह लाखों बल्बों की रोशनी से जगमगाता है, जिससे महल स्वर्णिम दृश्य में बदल जाता है।

हम्पी – यूनेस्को विश्व धरोहर

विजयनगर साम्राज्य के खंडहर हम्पी मध्यकालीन वैभव की झलक पेश करते हैं। यहाँ विट्ठल मंदिर का पत्थर का रथ, सुरों से गूंजने वाले स्तंभ और विराट विरुपाक्ष मंदिर जैसे स्मारक हैं। कभी यह दुनिया के सबसे समृद्ध नगरों में गिना जाता था और आज कर्नाटक के स्वर्णिम इतिहास का परिचायक है।

जोग फॉल्स – भव्य जलप्रपात

शिवमोग्गा ज़िले में स्थित जोग फॉल्स भारत का दूसरा सबसे ऊँचा जलप्रपात है, जिसकी ऊँचाई 830 फीट है। इसकी खासियत यह है कि यह चार धाराओं – राजा, रानी, रोरर और रॉकेट – में बँटकर वर्षा ऋतु में प्रचंड गर्जना के साथ गिरता है, जो अद्भुत प्राकृतिक नज़ारा पेश करता है।

कुंचिकल फॉल्स

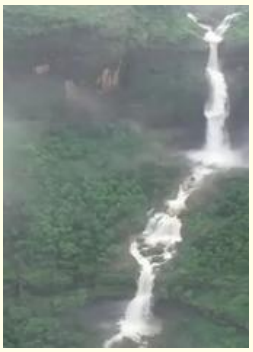

भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात
उडुपी ज़िले में अगुंबे घाट के पास स्थित कुंचिकल फॉल्स भारत का सबसे ऊँ चा जलप्रपात है, जिसकी कुल ऊँचाई लगभग 1,493 फीट है। वराही नदी से निर्मित यह प्रपात वर्षा ऋतु में विशेष रूप से शानदार दिखाई देता है। आसपास का हरा-भरा वर्षावन और शांत वातावरण इसे प्रकृति प्रेमियों और साहसिक यात्रियों के लिए स्वर्ग बना देता है।

शिवनसमुद्र – कावेरी पर जुड़वाँ झरने

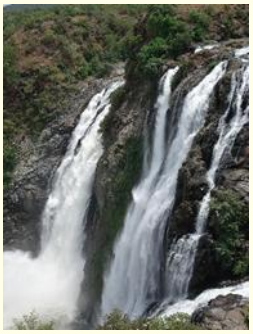

मांड्या ज़िले में स्थित शिवनसमुद्र, कावेरी नदी से विभाजित होकर चट्टानी द्वीप के चारों ओर बहने से बने जुड़वाँ झरनों – गगनचुक्की और भरचुक्की – के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान केवल प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यहीं 1902 में एशिया का पहला जलविद्युत केंद्र स्थापित हुआ, जिसने कोलार गोल्ड फील्ड्स को बिजली उपलब्ध कराई।

श्रवणबेलगोला – आध्यात्मिक धरोहर

श्रवणबेलगोला विश्व के सबसे पवित्र जैन तीर्थों में से एक है। इसकी पहचान 57 फीट ऊँची भगवान गोमतेश्वर बहुबली की एकाश्म प्रतिमा से है, जिसे 981 ईस्वी में एक ही पत्थर से तराशा गया था। हर 12 वर्ष में यहाँ भव्य महामस्तकाभिषेक उत्सव मनाया जाता है, जिसमें देश-विदेश से श्रद्धालु आते हैं।

उडुपी श्री कृष्ण मन्दिर

उडुपी श्री कृष्ण मन्दिर, भारत के कर्नाटक राज्य के उडुपी शहर में स्थित कृष्ण और द्वैत मठ को समर्पित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक मन्दिर है । इस मठ की स्थापना 13वीं शताब्दी में हुई थी । इस विग्रह को प्रारंभ में पूर्व दिशा में रखा गया था । इस मठ में एक विद्यार्थी कनकदास था। कहा जाता है कि कनकदास द्वारा प्रकट की गई गहन भक्ति के कारण, देवता पश्चिमाभिमुख (पश्चिम की ओर मुख करके) हो गए थे । कनकन किंडी (खिड़की) के माध्यम से विग्रह के दर्शन किया जा सकते हैं । आज तक यही प्रक्रिया अपनाई जाती है ।

गोकर्ण – पवित्र तट नगरी

गोकर्ण आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम है। यहाँ महाबलेश्वर मंदिर स्थित है, जहाँ भगवान शिव का पवित्र आत्मलिंग माना जाता है। साथ ही, ओम बीच, कुदले बीच और पैराडाइज़ बीच जैसे शांत तट इसे तीर्थयात्रियों और यात्रियों दोनों के लिए आकर्षक बनाते हैं।

कूर्ग (कोडगु) – भारत का स्कॉटलैंड

कूर्ग एक अनोखा पर्वतीय स्थल है, जो धुंध से ढकी पहाड़ियों, फैली हुई कॉफी बागानों और जीवंत कोडवा संस्कृति के लिए जाना जाता है। "भारत का स्कॉटलैंड" कहलाने वाला यह इलाका फील्ड मार्शल के. एम. करियप्पा और टेनिस सितारे रोहन बोपन्ना जैसे नायकों की जन्मभूमि भी है।

सेंट फिलोमेना चर्च – नवगॉथिक चमत्कार

मैसूर का सेंट फिलोमेना चर्च एशिया के सबसे बड़े चर्चों में से एक है। 1936 में बना यह जर्मनी के कोलोन कैथेड्रल से प्रेरित नवगॉथिक शैली का शानदार उदाहरण है। 175 फीट ऊँचे जुड़वाँ शिखर शहर के आकाश-दृश्य में चमकते हैं। इसके रंगीन काँच की खिड़कियाँ मसीह के जीवन की झलक दिखाती हैं। यह चर्च मैसूर की सांस्कृतिक विविधता और वास्तुकला धरोहर का महत्वपूर्ण प्रतीक है।

गोल गुम्बज़ (विजयपुर) – प्रतिध्वनि का गुंबद

विजयपुर (बिजापुर) स्थित गोल गुम्बज़ आदिलशाही वंश के सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा है। 1656 में निर्मित यह स्मारक अपने विशाल गुंबद के लिए विश्वप्रसिद्ध है, जो दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बिना सहारे वाला गुंबद है। इसकी "व्हिस्परिंग गैलरी" में धीरे से बोले गए शब्द भी कई बार दूसरी ओर स्पष्ट सुनाई देते हैं। इसका भव्य पैमाना, हिंदु-इस्लामी स्थापत्य और अद्भुत ध्वनि-प्रतिध्वनि इसे कर्नाटक का चमत्कार और भारत का प्रतिष्ठित ऐतिहासिक स्थल बनाते हैं।

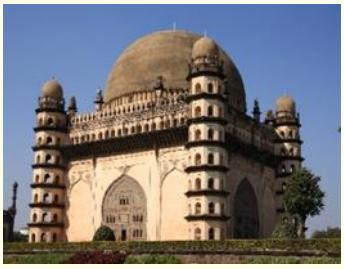

कर्नाटक के गौरवशाली नायक और प्रेरणास्रोत

नाडाप्रभु केम्पेगौड़ा – बेंगलूरु के जनक

नाडाप्रभु केम्पेगौड़ा (1510–1570) को बेंगलूरु का दूरदर्शी संस्थापक माना जाता है। विजयनगर साम्राज्य के अधीन रहते हुए उन्होंने केवल बहादुरी ही नहीं दिखाई, बल्कि योजनाबद्ध ढंग से आधुनिक शहर की नींव रखी। उन्होंने झीलें, तालाब, मंदिर और शहर की सीमाओं को दर्शाने वाले चार स्तंभ बनवाए, जो उनके शहरी नियोजन के गहरे दृष्टिकोण को दर्शाता हैं। उनके सम्मान में आज कर्नाटक के कई प्रमुख पहचानें उनके नाम से जुड़ी हैं जैसे की केम्पेगौड़ा बस स्टेशन (मजेस्टिक), केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और वहीं स्थापित 108 फीट ऊँची "स्टैच्यू ऑफ प्रॉस्पेरिटी" । यह स्मारक उनके अमर योगदान और कर्नाटक की प्रगति में उनके महत्व को उजागर करते हैं। वे आज भी "बेंगलूरु के पिता" और साहस व दृष्टि के अद्वितीय प्रतीक के रूप में याद किए जाते हैं।

सर एम. विश्वेश्वरैया – इंजीनियरिंग के आदर्श

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया (1861–1962) भारत के महान इंजीनियर, राजनेता और दूरदर्शी थे। कर्नाटक में जन्मे विश्वेश्वरैया ने कृष्णराज सागर बाँध का निर्माण कर सिंचाई और कृषि को नया जीवन दिया। मैसूर के दीवान (1912–1918) रहते हुए उन्होंने शिक्षा, उद्योग और सार्वजनिक निर्माण में ऐतिहासिक सुधार किए। 1955 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। पूरे देश में 15 सितम्बर को उनकी जयंती "इंजीनियर डे" के रूप में मनाई जाती है।

फील्ड मार्शल के. एम. करियप्पा – राष्ट्रभक्ति के प्रतीक

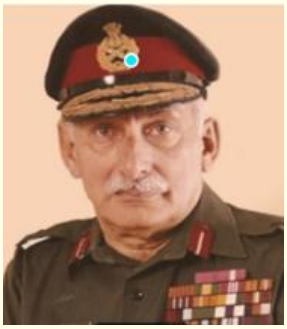

फील्ड मार्शल कोडंडेरा मडप्पा करियप्पा (1899–1993) स्वतंत्र भारत के पहले कमांडर-इन-चीफ थे। कर्नाटक के कूर्ग में जन्मे करियप्पा ने 1947–48 के कश्मीर युद्ध में सेना का नेतृत्व किया और भारतीय सेना को आधुनिक रूप दिया। 1986 में उन्हें फील्ड मार्शल की मानद उपाधि मिली। "राष्ट्र पहले, सेवा स्वयं से पहले" उनका आदर्श था, जो आज भी सैनिकों और नागरिकों को प्रेरित करता है।

प्रोफेसर उदुपी रामचंद्र राव (यू. आर. राव) – भारत के सैटेलाइट मैन

प्रोफेसर उदुपी रामचंद्र राव (1932–2017) कर्नाटक के गौरव और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के प्रमुख शिल्पियों में से एक थे। "सैटेलाइट मैन ऑफ इंडिया" के नाम से प्रसिद्ध, उन्होंने 20 से अधिक भारतीय उपग्रहों के निर्माण व प्रक्षेपण का नेतृत्व किया, जिसने देश में दूरसंचार, मौसम विज्ञान, टेलीविज़न प्रसारण और रिमोट सेंसिंग की दिशा बदल दी। इसरो के अध्यक्ष (1984–1994) रहते हुए उन्होंने INSAT श्रृंखला और PSLV रॉकेट कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उन्हें पद्मभूषण, पद्मविभूषण और 2013 में "सैटेलाइट हॉल ऑफ फ़ेम" में शामिल होने का गौरव प्राप्त हुआ। उनका कार्य आज भी वैज्ञानिकों को प्रेरित करता है।

प्रोफेसर चित्तमणि नागेसा रामचंद्र राव (सी. एन. आर. राव) – विज्ञान के शिखर पुरुष

1934 में बेंगलुरु में जन्मे प्रोफेसर सी. एन. आर. राव ठोस अवस्था और सामग्री रसायन विज्ञान (सॉलिड स्टेट व मैटीरियल्स केमिस्ट्री) के विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। उन्होंने 1,600 से अधिक शोध पत्र और 50 से ज़्यादा किताबें प्रकाशित की और नैनोविज्ञान तथा सुपरकंडक्टिविटी के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने भारत की विज्ञान नीति को आकार दिया। उनके अतुलनीय कार्य के लिए उन्हें पद्मश्री, पद्मविभूषण और 2014 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वे भारतीय विज्ञान की ऊँचाइयों के प्रेरणास्रोत हैं।

बानु मुश्ताक – कन्नड़ साहित्य की अंतरराष्ट्रीय पहचान

बानु मुश्ताक एक प्रसिद्ध कन्नड़ लेखिका, वकील और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। महिलाओं, दलितों और अल्पसंख्यकों के मुद्दों को उन्होंने अपनी कहानियों में सशक्त स्वर दिया। उनका संकलन हार्ट लैम्प: सिलेक्टेड स्टोरीज़ (अनुवाद: दीपा भष्टी) को 2025 में इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार मिला – यह पहली बार था जब किसी कन्नड़ रचना को यह सम्मान प्राप्त हुआ। उनका साहित्य कर्नाटक की जड़ों में रचा-बसा होते हुए भी वैश्विक मुद्दों से जुड़ता है।

तुलसी गौड़ा – जंगलों की विश्वकोश

उत्तर कन्नड़ जिले के होन्नल्ली गाँव की तुलसी गौड़ा पर्यावरण संरक्षण की जीवंत मिसाल हैं। हलक्की जनजाति से आने वाली तुलसी जी ने बिना औपचारिक शिक्षा के भी पौधों और जड़ी-बूटियों का अद्भुत ज्ञान अर्जित किया। उन्होंने 30,000 से अधिक पेड़ लगाए और जैव-विविधता को बचाने में जीवन समर्पित किया। 2020 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। सरल जीवन और अडिग संकल्प से वे प्रकृति प्रेम की प्रेरणा बनी हुई हैं।

कर्नाटक के बहुत महशूर मीठा चीज़ है ओब्बट्टु

मुख्य सामाग्री:
1 कप मैदा, 1/4 कप खाना पकाने का तेल, 1/8 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, चुटकी भर नमक, 1/2 कप पानी,
1 कप तुअर दाल, 1 कप कद्दूकस्त किया हुआ गुड़, 1/4 कप कद्दूकस्त किया हुआ नारियल, 2 – इलायची, आवश्यकतानुसार पानी

एक कप मैदा लें, उसमें हल्दी पाउडर और एक चुटकी नमक डालें। अच्छी तरह मिलाएँ। बीच में गड्ढा बनाएँ और थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए चिपचिपा आटा गूंद लें।

एक कटोरे में 1/4 कप तेल लें और आटे में 1 छोटा चम्मच तेल डालें। अपनी हथेली से गूंदना शुरू करें। इसे एक मिनट तक गूंदें और जब भी आटा हाथों पर चिपकने लगता है, एक छोटा चम्मच तेल और डालें। जब तक आटा पूरी तरह से नरम न हो जाए, तब तक यही प्रक्रिया दोहराएँ।

अब बचा हुआ तेल आटे पर डालें। आटा तेल में डूबा रहेगा और भीगा रहेगा। इसलिए ज़रूरत पड़ने पर 1 बड़ा चम्मच और तेल डालें। कटोरे को ढक्कन से बंद करके कम से कम 6-8 घंटे के लिए छोड़ दें।

अब भरावन का काम आता है। तूअर दाल को एक खुले कटोरे या पैन में 4 कप पानी डालकर उबालें। दाल को तब तक पकने दें जब तक वह फूल न जाए और गूदेदार न हो जाए। यानी दाल हाथ से मसलने लायक होनी चाहिए, लेकिन सख्त दिखनी चाहिए और आकार में बनी रहनी चाहिए। दाल पकने के बाद, सारा पानी निकालकर एक कटोरे में इकट्ठा कर लें।

अब पकी हुई दाल, कद्दूकस किया हुआ नारियल, कद्दूकस किया हुआ गुड़ और इलायची को अच्छी तरह पीसकर पेस्ट बना लें।

अगर आपको लगता है कि मिश्रण पानीदार और ज़्यादा गीला है, तो मिश्रण को गरम तवे पर तब तक भूनें और पकाएँ जब तक कि वह बिना नमी वाला, चिपचिपा न हो जाए। अगर मिश्रण सख्त और चिपचिपा न हो, तो स्टफिंग पकाने की ज़रूरत नहीं है। स्टफिंग लें और नींबू के आकार के गोले बना लें।

ओबट्टू के आटे को 8 घंटे के लिए रख दें, और उसमें से एक बड़े आंवले के आकार की लोई तोड़ लें। लोई का आकार स्टफिंग लोई के आकार का आधा होना चाहिए। स्टफिंग लोई, लोई से बड़ी होनी चाहिए। लोई को एक चिकनी की हुई ओबट्टू शीट (जो आपको दुकानों में मिल जाएगी) पर रखें और पूरी की तरह हल्के से फैलाएँ। ध्यान रखें कि कोने बीच वाले हिस्से से पतले हों। अब स्टफिंग लोई को बीच में रखें और स्टफिंग को आटे से ढक दें। आप केले के पत्ते का इस्तेमाल भी कर सकते हैं, लेकिन ओबट्टू शीट सबसे अच्छा काम करती है।

इसे अपने हाथों से दबाएँ और जितना हो सके थपथपाएँ ताकि स्टफिंग ओब्बट्टु पर समान रूप से फैल जाए। इसे अपनी पसंद के अनुसार मध्यम पतला या मोटा बनाएँ।

एक रोटी की तवा गरम करें (लोहे का तवा सबसे अच्छा होता है) और उस पर तेल की कुछ बूँदें डालें। तवा गरम होने पर, ओबट्टू शीट लें और उसे तवे पर पलट दें। बस होलिगे को डालें और शीट को हटा दें। इसे अच्छी तरह फैलाएँ। एक छोटा चम्मच तेल डालकर पकाएँ। मध्यम आँच पर दोनों तरफ से सुनहरा भूरा होने तक पकाएँ। एक प्लेट में निकालकर गरमागरम परोसें, ऊपर से दूध और घी डालकर । बहुत स्वादिष्ट!

हडको वार्षिकोत्सव

IN YOUR
SELF

बेंगलूरु क्षेत्रीय कायालय में हिन्दी पखवाडा का आचरण 2025

हिन्दी कायाशाला

प्रतियोगिताओं का आयोजन

स्वच्छ भारत अभियान

कब्बन रोड

Before (Cubbon Road)

After

डिकेंसन रोड

Before (Dickenson Road)

After

नेशनल गेम्स विलेज

Before (National Games Village)

After

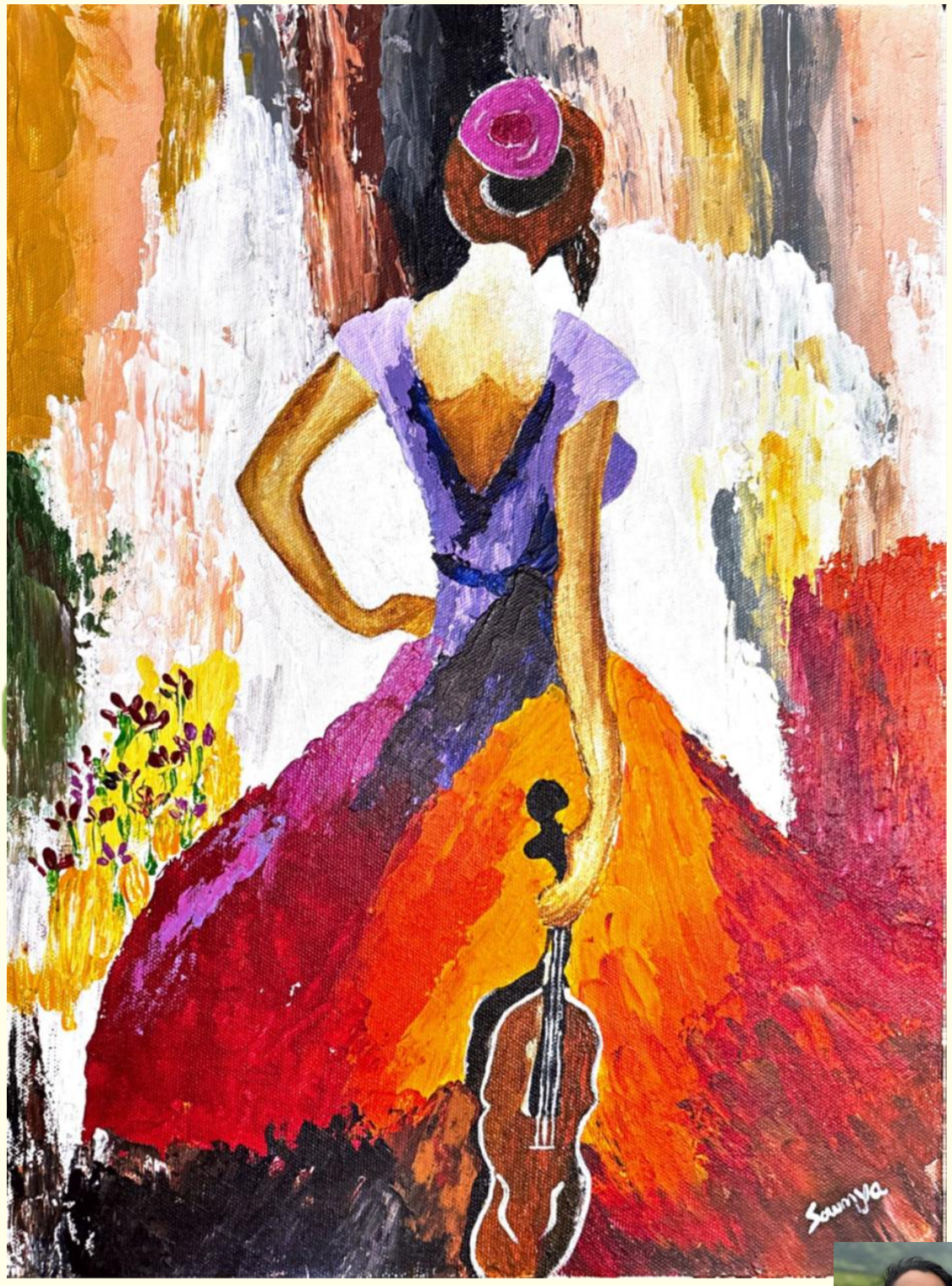

सौम्या विनयन
पी.वै. विनयन, प्र (आईटी) के पत्नी

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

आश्नी शेट्टी
श्री के.टी. हरीश शेट्टी
के सुपुत्रि

निहारिका आचार
उमेश बाबु, उ.प्र (प्र) के सुपुत्रि

हडको क्षेत्रीय कार्यालय के निवृत्त अधिकारीगण – 2025

श्री के.एच. केशव मूर्ती संयुक्त महा प्रबंधक (प) 31-01-2025	श्री आर. मुरुगेशन एम.टी.एस 30-04-2025	श्री गुरुदत्त सूर्यनारायण राव महा प्रबंधक (प) 31-05-2025

श्रीमती वी. चित्रा वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) 31-05-2025	श्री डी. श्रीनाथ वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) 31-07-2025	मिस बी. संध्या राणी उप महा प्रबंधक (स) 31-08-2025

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको – बेंगलूरु क्षेत्रीय कार्यालय